इंदौर। दादी प्रकाशमणि की पुण्यतिथि के अवसर पर ब्र.कु. ओमप्रकाश, पूर्व महापौर डॉ.उमाशशि, ब्र.कु.हेमलता तथा अन्य।

रायपुर। छ.ग.के वाणिज्य एवं पर्यावरण मंत्री राजेश मूणत को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.सविता।

जबलपुर (नेपियर टाउन)। कालीमठ के महंत कालीनंद महाराज को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.भावना।

राजनांदगांव। कलेक्टर अशोक अग्रवाल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.पुष्पा।

नरसिंहपुर। एस.पी. मनीष कपुरिया को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.प्रीति।

बूंदी। जिला न्यायाधीश रमेश मीणा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.कमला।

रतलाम। जिला अभिभावक संघ के सदस्यों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात ब्र.कु.सीमा।

राजगढ़। विधायक हेमराज कल्पोनी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.मधु।

हरिद्वार। संत गोष्ठी के पश्चात महामण्डलेश्वरों एवं महंतों के साथ ब्र.कु.प्रेमलता, ब्र.कु.मीना तथा ब्र.कु.गीता समूह चित्र में।

रामलीला से बनाएं श्रेष्ठ जीवन

ब्र.कु. दिलीप राजकुले, ओम शान्ति मीडिया

रामलीला के पीछे भी कोई मकसद जरूर रहा होगा जिससे आम आदमी को प्रेरणा मिले और उसकी जिंदगी बेहतर बने। सचमुच श्री राम जैसा चरित्र सराहनीय है। हमारे पूर्वजों ने रामलीला के माध्यम से जो संदेश पहुँचाना चाहा वो बरसो से कहीं खो गया है।

शहर हो या गाँव हो, बच्चा हो या बूढ़ा हो, चाहे जवान हो,पंजाबी हो या बंगाली हो, हिन्दुस्तान में हर कोई जानता है कि भारत में हर साल रामलीला होती है। सैंकड़ों, हजारों वर्षों से हो रही रामलीला शायद आगे भी कई वर्षों तक चलती रहेगी। श्री राम का प्रभाव भारत में आम आदमी के ऊपर गहरा है। इस पर हजारों रूपयों का खर्च किया जाता है। लेकिन रामलीला देखकर आम आदमी को मिलता क्या है? वही कहानी हर साल हम देखते रहते हैं, कितना खर्च करते हैं! अगर यही खर्च हेल्थ सेक्टर पर किया जाये तो न जाने कितने लोगों की जान बच सकती है, एज्युकेशन पर खर्च हो तो न जाने कितने लोगों को फायदा हो सकता है। जो भी पैसा सालाना खर्च करते हैं उससे एक आदमी को क्या फायदा? एक बात तो पक्की है कि हमारे पूर्वज ज्ञान की दृष्टि से बहुत आगे थे। कोई भी काम व्यर्थ नहीं करते थे। रामलीला के पीछे भी कोई मकसद जरूर रहा होगा जिससे आम आदमी को प्रेरणा मिले और उसकी जिंदगी बेहतर बने। **सचमुच श्री राम जैसा चरित्र सराहनीय है।** हमारे पूर्वजों ने रामलीला के माध्यम से जो संदेश पहुँचाना चाहा वो बरसो से कहीं खो गया है। सबका देखने का दृष्टिकोण अलग-अलग है। रामलीला आज गरीबों के लिए मनोरंजन और राजनीतिज्ञ लोगों के लिए उनकी ताक़त दिखाने का एक साधन बन गया है। पहले जमाने में फिर भी रामलीला देखने जाते थे पर आज की पीढ़ी और बड़े शहरों के बच्चे तो टी.वी. सीरियल में ज्यादा रूचि रखते हैं। और यह क्यों नहीं होगा जब वही कहानी हर साल चलेगी तो एक दिन ऐसा जरूर आयेगा जब कोई देखना नहीं चाहेगा। दुर्भाग्य की बात यह है कि इतनी खूबसूरत कहानी का हम फायदा नहीं ले पा रहे हैं। सचमुच इस अलौकिक विशेष कहानी से उमंग-उत्साह तथा जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए फायदा लेना चाहिए। बहुत सारे लोगों का मानना है कि बुराई पर भलाई की विजय है। कुछ लोग इसे आदर्श राजा, आदर्श पति, भाई व बेटे की कहानी बताते हैं। कोई तो मनोरंजन के रूप में देखते हैं, कोई रामायण के हर किरदार में कोई न कोई विशेष अच्छा संदेश लेने की कोशिश करते हैं, कोई तो रामायण के विरूद्ध भी हैं जिन्हें हर हिस्से में दिक्कतें नज़र आती हैं।

श्री राम की जिंदगी को हम तीन हिस्सों में बाट लेते हैं। श्री राम की पहले हिस्से में शुरूआत की जिन्दगी सुखद, सीता से शादी हो गई और लौटकर अयोध्या वापस आ गये। राजा बनने वाले थे,जन्म राजाई घराने में जहाँ कोई कमी नहीं, बहुत सफल व्यक्ति थे। आज के समय में मैनेजमेंट गुरू बताते हैं कि अपने जिन्दगी को 6 भागों में बाँट लेना चाहिए, तीन आन्तरिक और तीन बाह्य। एक कैरियर के अंदर आप कितने सफल होते है इसे मापो, दूसरा परिवार में आपके रिश्ते कैसे हैं? यह बताता है कि आप कितने सफल हैं। तीसरा शारीरिक रूप से आप कितने स्वस्थ हैं। चौथा सामाजिक रूप से कहाँ हो? पाँचवा मानसिक रूप में आपका विकास कैसा है और छठवाँ आध्यात्मिक रूप से आप कितने उन्नत और अच्छे इन्सान हो। अगर श्री राम को देखें तो वह भी इस जीवन का एक हिस्सा है और वह सम्पूर्ण सफल इन्सान हैं। कैसे? कैरियर में देखें तो वह एक राजा थे। अब कैरियर में इससे ज्यादा सफलता क्या हो सकती है कि इतना उपर उठ गये थे कि आज के सबसे अमीर इंसान से भी ज्यादा है। अब पारिवारिक हिस्से में देखते हैं कि श्री राम की जिन्दगी कैसी थी? बहुत सुंदर प्यारे माँ-बाप और प्यारे भाई और सुंदर पत्नि,यह तो बहुत अच्छा है। फिजिकली कैसे थे? उस समय उन्होंने स्वयंवर में जो धनुष उठाया वह उनकी फिजिकल शक्ति को दर्शाता है। उस समय शायद शारीरिक रूप से सबसे मजबूत लोगों में से एक थे। अगर सोशल रूप से श्री राम का ब्योरा देखें कि श्री राम और श्री लक्ष्मण 14-15 साल की उम्र में अपने गुरूओं की रक्षा करने के लिए वन में गये इसका मतलब सोशल जिम्मेवारी सोसायटी के लिए निभाई। ऐसा भी हो सकता था कि अपनी सेना भेज देते लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया वह भी जवानी में। अब मानसिक रूप में देखें कि उस समय भगवान ने सबसे अच्छी शिक्षण प्रणाली रखी होगी, सबसे अच्छे गुरू थे उन्होने उनको शिक्षा दी। तो मानसिक रूप से भी वो काफी सफल थे। आध्यात्मिक रूप से देखिए कि जिसे लोग भगवान का दर्जा देते हैं उससे ज्यादा सफल हम किसे मान सकते हैं। जीवन के इन 6 भागों में श्री राम सम्पूर्ण व समान रूप से सफल थे। बहुत कम लोगों को ऐसी सफलता मिलती है। कोई कैरियर में सफल होता है और उसका पारिवारिक जीवन ठीक नहीं है तो क्या उसको सफल कहेंगे? या धन भी है, परिवार भी है, धन कमाने के चक्कर में हेल्थ ठीक नहीं है तो क्या यह सफलता होगी? धन भी है, परिवार भी है, सेहत भी है और देखा जाये सोशल सर्कल कुछ भी नहीं, ढूंढ़ने से भी कोई दोस्त नहीं,तो ऐसी सफलता किस काम की! श्रीराम भगवान के समान थे। सब कुछ उनके पास था लेकिन कुछ ही समय में प्रकृति ने उनके साथ खेल खेलना शुरू कर दिया।

यहाँ से उनकी जिन्दगी का दूसरा पार्ट शुरू होता है,अचानक उनके भाग्य ने साथ छोड़ दिया। एक दिन वह राजा थे और दूसरे दिन सड़क पर। यह तो **प्रतीकात्मक है** कि यह हुआ कैसे? जब हालात आपकी जिन्दगी में बदलते है तब कारण अपने आप बनते जाते हैं। अब उनकी सफलता दुबारा गिनते हैं। कैरियर के हिसाब से तो राजा थे, पर आम आदमी की तरह सड़क पर आ गये। यह ऐसा हुआ आज अगर यह मान लो कि किसी अमीर आदमी का राज्य ही छीन लिया जाए तो उसमें **तनाव** कितना होगा? यह तो बहुत बड़ी बात है। कॉर्पोरेट जगत में आज सुबह लंच का डिब्बा लेकर जाते हैं और दोपहर को छुट्टी तो सोचो उस वक्त कैसा फील करते होंगे वे लोग। अगर आप नौकरी करते हो तो सोच के देखो ऐसा आपके साथ हो तो कैसा लगेगा? क्या होगा आपके **तनाव** का? अगर आप व्यापारी है कितनी बार आपके साथ ऐसा होता होगा कि ऑर्डर लूज कर देते हैं, और जिसमें आपका कोई कसूर नहीं होता उस समय कैसा लगेगा आपको? या आपका व्यापार किसी भी कारण से चाहे वह गवर्नमेंट पॉलिसी हो या कम्पटीशन हो या कोई भी कारण हो जब नीचे जाने लगता है तब कैसा लगता है? मतलब कैरियर में जब भी कोई प्रेशर आता है तब ज्यादातर लोगों की हालत खराब हो जाती है, नींद उड़ जाती है,आदमी चिड़चिड़ा हो जाता है। अब श्री राम का सब कुछ लुट गया और एक कहानी की तरह सहज लेते हैं।

अब दूसरा हिस्सा देखते हैं पारिवारिक, उनकी अपनी फैमिली है जो जिम्मेदार है,जबकि उनके परिवार में पिताश्री गुजर गये थे, -शेष पेज 4 पर